हिन्दी
कक्षा IX

दुःख का अधिकार

अहम् योग्यः अस्मि

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल
वसंत विहार, नई दिल्ली
(सम्बद्ध सी.बी.एस. ई)

0957CH01

प्राचार्या की कलम से

प्रिय पाठकगण

'परिवर्तन ही एकमात्र अचल राशि है, स्थायी है |' एक बुद्धिजीवी द्वारा कही गई यह पंक्ति वास्तव में सत्य है | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला है | शिक्षा का ध्यान अब अधिकाधिक छात्र केन्द्रित शिक्षा पर है | शिक्षा के क्षेत्र में बदलते परिदृश्य के साथ तालमेल बैठाने, शिक्षा को रोचक-मनोरंजक बनाने तथा विकसित करने हेतु नवीन रणनीतियों को अपनाने का समय है | शिक्षण सामग्री को इस प्रकार तैयार करने की आवश्यकता है, जिसे छात्र सरलता से समझ सकें | केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षण क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने के तरीके में भी बदलाव किया है |

पाठ्यचर्या के साथ कला एकीकरण, हास्य आधारित शिक्षा, शारीरिक क्षमता पर ज़ोर, ये सभी प्रयास छात्रों को भविष्य की आवश्यकताओं के लिए तैयार करने हेतु हैं | ऐसा ही एक प्रयास है; पाठ्यचर्या को ग्राफिक उपन्यासों में बदलना | श्री संदीप सेठी ने इसमें अहम् भूमिका निभाई है | अपने निरंतर निर्देशन तथा मार्गदर्शन के माध्यम से उन्होंने शिक्षकगण को भी प्रेरित किया, उन्हें अपना समर्थन दिया |

मैं सुश्री अनीता करवाल, सचिव स्कूली शिक्षा विभाग, मानव संसाधन व विकास मंत्रालय की भी आभारी हूँ, जिनके बहुमूल्य सहयोग और निरंतर प्रेरणा ने शिक्षकों को दिलचस्प ग्राफिक के रूप में अवधारणा को संग्रहित करने के लिए प्रोत्साहित किया है | मुझे पूरा विश्वास है कि यह कक्षाओं में विषयों को पढ़ाने के तरीके को बदल देगा | एक उपकरण के रूप में कॉमिक स्ट्रिप का उपयोग करके, अवधारणाओं को सरल तरीके से समझाया जाएगा, जो छात्रों के लिए अधिक प्रासंगिक होगा |

सुश्री अनीता करवाल-सचिव स्कूली शिक्षा विभाग, मानव संसाधन व विकास मंत्रालय, श्री मनोज आहूजा-अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा परियोजना के पायलट श्री संदीप सेठी के योग्य संगठन हेतु हमारा हार्दिक धन्यवाद |

मैं उन प्रतिभाशाली शिक्षकों तथा शिष्य मंडली को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने समयबद्ध तरीके से रचनात्मक रूप से शानदार, मनोरंजक सामग्री का निर्माण किया जो छात्रों के लिए असाधारण व अमूल्य निधि सिद्ध होगा |

पठन का आनंद लें |

शेफ़ाली गुप्ता

प्राचार्या

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल

वसंत विहार

नई दिल्ली

प्रस्तावना

मानव की पोशाकें या पहनावा ही उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करता है | पोशाक से ही समाज में उसका दर्जा निश्चित होता है | निचली श्रेणियों के दुःख की अनुभूति को समझने में यही पोशाक अड़चन बनती है और दुःख मनाने का अधिकार सभी को समान होता है | इस व्यंग्यपूर्ण कहानी में इस बात पर दुःख प्रकट किया गया कि लोग गरीबों के दुःख को दुःख नहीं समझते | हमारे देश में कुछ अभागे ऐसे भी हैं, जिन्हें दुःख मनाने का अधिकार भी नहीं है |

उपर्युक्त सन्देश को सार्थक करती लेखक यशपाल की कहानी-दुःख का अधिकार को वर्तमान समय से जोड़ने के लिए, इसकी प्रासंगिकता हेतु आधुनिक परिवार का सहारा लिया गया है | कहानी के भाव को माँ-बेटे तथा अधेड़ महिला के मध्य हुए संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है |

दुःख सभी को तोड़ देता है | दुःख के सामने सभी विवश हो जाते हैं, परन्तु कुछ ऐसे मजबूर लोग भी हैं, जिनकी विवशता कोई नहीं समझता | बल्कि लोग उनके घाव पर नमक छिड़ककर उनके दुःख को और बढ़ा देते हैं | कहानी के द्वारा न केवल समाज में व्याप्त कुरीतियों को उजागर किया गया है बल्कि कहानी हमें सोचने पर विवश भी करती है कि दुःख मनाने का सबका समान अधिकार होता है, पर इसको मनाने की सहूलियत भी चाहिए |

विषय - सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	दृश्य आरेखण	5
2	पात्र परिचय	6
3	अधिगम बिंदु	8
4	कहानी	9
5	व्याकरण डलिया	11
6	कहानी	12
7	वर्ग पहेली–बूझो तो जाने	14
8	कहानी	15
9	खेल–खेल में (टैबू), रचनात्मक कार्य	17
10	कहानी	19
11	विषय एकीकरण गतिविधियाँ	20
12	कहानी	21
13	विचारावेश, अनुभवीय ज्ञान	24
14	कहानी	25
15	पठन कौशल, कथन के साथ उचित मिलान	27
16	बहुविकल्पीय प्रश्न	28
17	शब्दावली	30

दृश्य आरेखण

वर्तमान परिवेश में माँ तथा बेटे में बातचीत |

माँ द्वारा बेटे को समझाना कि पोशाक के आधार पर किसी के प्रति धारणा बनाना गलत |

बच्चे द्वारा महिला के पास जाकर उसका दुःख जानने की चेष्टा किन्तु माँ द्वारा पोशाक के कारण रोकना |

माँ -बेटे का अधेड़ महिला के पास बैठना तथा उसकी समस्या के बारे में, रोने के कारण पूछना |

अधेड़ महिला ,जिसने साँप के काटने से अपना जवान बेटा खो दिया | बहू तथा बच्चों के कारण खरबूजे बेचने को विवश हुई | अपने दुःख व परेशानी के विषय में बताना | माँ–बेटे द्वारा दिलासा देना |

आस-पास के लोगों का महिला के प्रति दुर्व्यवहार | सूतक के कारण बुढ़िया के प्रति घृणा | बेटे द्वारा लोगों को बताना कि वे महिला के साथ उचित व्यवहार नहीं कर रहे |

पोशाक के कारण सहानुभूति होते हुए भी फुटपाथ पर बैठी महिला के दुःख का कारण न पूछ पाने पर दूर खड़ा लेखक जो यह सब देख रहा था उसके द्वारा बच्चे को शाबाशी व प्रोत्साहन देना | महसूस करना कि दुःख पर सबका समान अधिकार होता है |

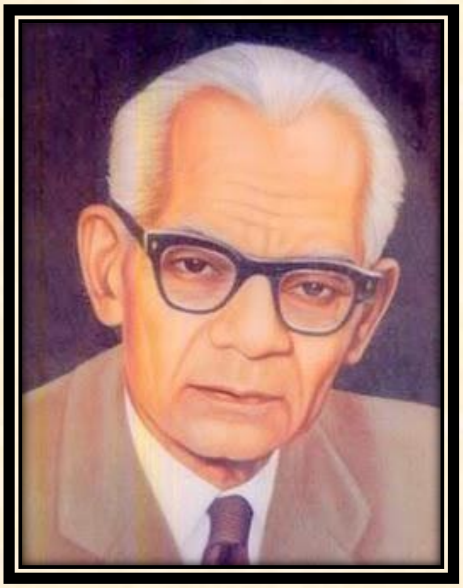

लेखक- यशपाल

पात्र परिचय

अमन–एक चौदह वर्षीय किशोर जो समाज में फैले अंधविश्वासों को देखकर हैरान है तथा दूसरों को तर्कहीन मान्यताओं को अपनाने का विरोध करता है | उसका बालमन समाज की कुरीतियों को देखकर बोझिल है | अपनी माँ के साथ बाज़ार जाने पर वहाँ मिली अधेड़ महिला के प्रति संवेदनशीलता की भावना रखता है तथा उसकी सहायता करने का भी प्रयास करता है |

माँ- एक चालीस वर्षीय महिला जोकि अपने पुत्र से प्रेम करती है | उसे सही-गलत की पहचान बताती है किन्तु स्वयं समाज में व्याप्त मान्यताओं में बँधी होने के कारण खुल कर पुत्र का साथ नहीं दे पा रही होती | पुत्र के उचित तर्कों को सुनकर वह निरुत्तर हो जाती है |

अधेड़ महिला- पचपन वर्षीय एक अधेड़ तथा फटे-पुराने वस्त्र पहने गरीब महिला जिसके जवान बेटे को मरे एक दिन भी नहीं हुआ और उसको अपनी बीमार बहू तथा पोते-पोतियों के लिए बाज़ार में खरबूजे बेचने आना पड़ा | बाज़ार में बैठी वह बेचारी फफक-फफककर रो रही है | अमन तथा उसकी माँ के पूछने पर अपनी दर्द भरी दास्ताँ उन्हें सुनाती है |

लालाजी – बाज़ार में कपड़े की दुकान चलाने वाला साठ वर्षीय वृद्ध जो अधेड़ महिला पर ताने कस रहा है क्योंकि उसके अनुसार घर में सूतक होते हुए भी वह बाज़ार में खरबूजे बेचने आ गई |

लेखक– तीस-पैंतीस वर्षीय युवक जो अपनी पोशाक के कारण बुढ़िया के दुःख का कारण पता नहीं लगा पाता न ही उसकी सहायता कर पाता है किन्तु किशोर अमन की संवेदनशीलता, तार्किकता तथा परमार्थ की भावना के सामने नतमस्तक हो जाता है |

बच्चा- अमन की गाड़ी के आगे से लाल बत्ती पर गुज़रता नौ वर्षीय एक बच्चा जो फटे-पुराने वस्त्र पहने है |

दुकानदार - लगभग चालीस-पैंतालीस वर्षीय दुकानदार, जो लाला जी तथा दुकानदार के साथ मिलकर अधेड़ महिला पर ताने कस रहा है |

मोची- पैंतीस वर्षीय बाज़ार में बैठा मोची | अधेड़ महिला पर कसते तानों की बौछार में वह भी शामिल है |

दुकानदार- तीस वर्षीय दुकानदार जो लगातार अधेड़ महिला को कोस रहा है |

अधिगम बिंदु

विषय -हिन्दी

कहानी -दुःख का अधिकार

1. समाज के निम्न वर्ग तथा मध्यम वर्ग के चरित्र का वर्णन कर पाने में सक्षम हो पाएँगे |
2. समाज के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास होगा |
3. ग्रामीण तथा शहरी जन-जीवन की जानकारी से परिचित हो पाएँगे |
4. जीवन में पोशाक के महत्व से परिचित होंगे |
5. पठन कौशल तथा लेखन कौशल का विकास हो पाएगा |
6. रचनात्मकता में वृद्धि हो पाएगी |
7. कहानी के मुख्य भाव से परिचित होंगे |
8. संवेदनशीलता की भावना का विकास हो पाएगा |
9. समाज में व्याप्त अंधविश्वासों के प्रति समझ का विकास होगा |
10. अंधविश्वासों के उन्मूलन के विषय पर मौखिक अभिव्यक्ति कर पाएँगे |
11. दुःख की अनुभूति सभी को समान होती है, जान पाएँगे |

माँ और अमन गाड़ी से कहीं जा रहे हैं | दोनों की नज़र कार के सामने से गुजर रहे लड़के पर पड़ती है |
बताओ तो अमन, यह बच्चा कहाँ जा रहा होगा?
माँ, वह अवश्य ही कहीं काम करने जा रहा होगा |
कैसा काम?
यही कोई कार साफ़ करने का काम या फिर किसी ढाबे पर बर्तन मांजने का काम और क्या!
तुम्हे ऐसा क्यों लगा कि वह इस तरह के काम ही करता होगा?
माँ, उसके कपड़ों को तो देखो! कितने मैले, पुराने और फटे हुए भी हैं! इनको देखकर कोई भी बता सकता है कि यह इसी तरह के काम करता होगा |
बेटा, आज मैं तुमको एक पते की बात बताती हूँ|
क्या?
माना कि पोशाक का समाज में बहुत महत्व है और यह समाज में हमारा दर्जा भी निश्चित करती है किन्तु कभी भी किसी को उसके कपड़ों के आधार पर आँकना नहीं चाहिए | हम अक्सर कपड़ों को देखकर ही व्यक्ति के बारे में कोई धारणा बना लेते हैं, जो गलत है |
पर माँ, पोशाक ही तो समाज में हमारी पहचान बताती है |
हाँ बेटा, दुर्भाग्यवश यह हमारे समाज की सच्चाई है|

चलो बेटा, हम बाज़ार पहुँच चुके हैं|
जी माँ
माँ और बेटा बाज़ार में घूम रहे हैं, वे एक अधेड़ आयु की औरत को देखते हैं, जो खरबूजे टोकरी में रखे बैठी है तथा फफक-फफककर रो रही है|
माँ देखो तो! वह औरत इतना क्यों रो रही है? चलो न, चलकर उससे पूछते हैं|
लेकिन बेटा....!
लेकिन क्या माँ? वह बहुत दुखी लग रही है| हमें उससे बात करनी चाहिए|
बेटा, यह सार्वजनिक स्थान है| और फिर हमें देखो! कहाँ हम, कहाँ वो!
तो!
तो इतने लोग हैं, अपनी इज्ज़त पर बट्टा क्यों लगाना चाहते हो? अगर हम इनसे बात करने लगे तो लोग क्या सोचेंगे?
क्या सोचेंगे माँ?
तुम उसकी हालत देख रहे हो ना!
किस हालत की बात कर रहीं हैं आप?
किस हाल में है वह और खुद को देखो! भला कैसा लगेगा उससे बात करते हुए?

आओ मिलकर ढूँढें

व्याकरण डलिया

खरबूजे की डलिया में से अनुस्वार शब्द छाँटकर दूसरी खाली डलिया में लिखिए |

अभी कुछ देर पहले ही तो आपने कहा था कि हमें किसी को भी उसके कपड़ों के आधार पर आँकना नहीं चाहिए और आप ही अब ऐसी बात कर रहीं हैं |
रुको तो! देखो, लोग भी इसके बारे में कुछ कह रहे हैं | ऐसा लगता है, जैसे उसके सिर पर आसमान टूट पडा है|
क्या?
थोड़ा पास जाकर सुनते हैं |
इस बेहया औरत को तो देखो!
हम्म्म्म! देख ही रहे हैं | पत्थर दिल! इसके मर्म को कोई बात छूती नहीं |
ज़माने की कोई शर्म नहीं, लिहाज़ नहीं! अभी कल ही तो इसका बेटा गुजरा है और आ गई आज पैसे कमाने, बाज़ार में सौदा करने!
इन बेशर्म लोगों के लिए रिश्ते-नाते, बीवी-बच्चे सब रोटी का टुकड़ा है |
इन्हें क्या फर्क पड़ता है कोई जिए या मरे | इन्हें तो सिर्फ पैसे से मतलब है |

अरे भाई! इनके लिए मरे-जिए का कोई मतलब नही| उन्हें अपना धर्म नहीं रखना तो न रखें पर दूसरे के धर्म का तो ख्याल करें |
सो तो है |
बाज़ार में हज़ार लोग आते-जाते हैं | अब उन सबको क्या पता कि इसके घर सूतक लगा है |
ऐसे में कोई इससे खरबूजे खरीद कर खा ले तो वह तो अपने धर्म से गया! क्या अँधेर है?
अंधेर ही नहीं कलयुग है भाई कलयुग!
क्या जमाना आ गया है! हे राम!
माँ, आपने इन लोगों की बातें सुनी?
हाँ बेटा, सब इस पर कीचड़ उछाल रहे हैं |
उस बेचारी औरत से कोई उसका दुःख नहीं पूछ रहा; उलटे ताने दे रहे हैं | अब तो हमें इससे बात करनी ही होगी |
बेटा औरत के पास चल देता है और माँ हिचकिचाते हुए पीछे-पीछे चल देती है |
काकी, क्या हुआ आपको? आप ठीक हो?
अधेड़ महिला उसको देखकर पुन: रोने लगती है |
हम आपकी मदद कैसे कर सकते हैं?
मदद! क्या मेरा बेटा वापसआ सकता है? क्या इस समाज की सोच बदल सकती है?

भाषा-विस्तार

वर्ग पहेली –बूझो तो जाने

फु	ज़िं	दा	अ	धे	ड़
ट	प	ह	ना	वा	यु
पा	ड़ो	दु	पो	आ	टा
थ	सी	ख	ता	बा	श
प	र	लो	क	ला	ना
क	ल	भ	ल	भ	का

वर्ग पहेली के आधार पर निर्देशानुसार उत्तर लिखिए -

1-	पोशाक का पर्यायवाची	बाएँ से दाएँ
2-	हवा का पर्यायवाची शब्द	बाएँ से दाएँ
3-	इहलोक का विलोम शब्द	बाएँ से दाएँ
4-	मुर्दा का विलोम शब्द	बाएँ से दाएँ
5-	ढलती उम्र का व्यक्ति	बाएँ से दाएँ
6-	सड़क के किनारे चलने का स्थान	ऊपर से नीचे
7-	व्यथा का अर्थ	ऊपर से नीचे
8-	बरकत का अर्थ	ऊपर से नीचे
9-	घर के पास रहने वाले	ऊपर से नीचे
10-	पोती का पुल्लिंग	ऊपर से नीचे

उत्तर

1- पहनावा 2- वायु 3-परलोक 4-ज़िंदा 5-बूढ़ा 6-फुटपाथ 7-दुःख 8-लाभ 9- पड़ोसी 10- पोता

सही कह रहे हैं ये |
मेरे घर में सूतक है |
सूतक!
सिर्फ सूतक ही नहीं है, इसके साथ-साथ मेरी बहू बुखार से तप रही है |
बहुत दुःख हुआ सुनकर |
यह कहकर वह वापस रोने लगती है|
ओह!
मेरे पोते-पोती भूख से बिलबिला रहे हैं |
माँ, यह सूतक क्या होता है? क्या यह कोई बीमारी है, जो हमें भी इसके पास बैठने से लग जाएगी?
नहीं बेटा, समाज में जब किसी की मृत्यु होती है तो उस दिन से लेकर तेरह दिनों तक उस घर को अपवित्र माना जाता है |
अच्छा! फिर?
घर में कोई शुभ कार्य नहीं किए जाते | इस स्थिति में परिवार के हर सदस्य तथा हर वस्तु को अपवित्र माना जाता है |
पर ऐसा मानता कौन है?
समाज |
समाज!
हाँ! समाज ऐसा मानता है |
पर क्यों?
समाज की यह धारणा है कि ऐसे घर के सदस्य और सदस्यों के हाथ से ली गयी वस्तुएँ खाने-पीने से व्यक्ति का भी धर्म और ईमान नष्ट हो जाता है और वह पाप का भागी बन जाता है |
इसलिए ये लोग ऐसा बोल रहे हैं?
हाँ बेटा!

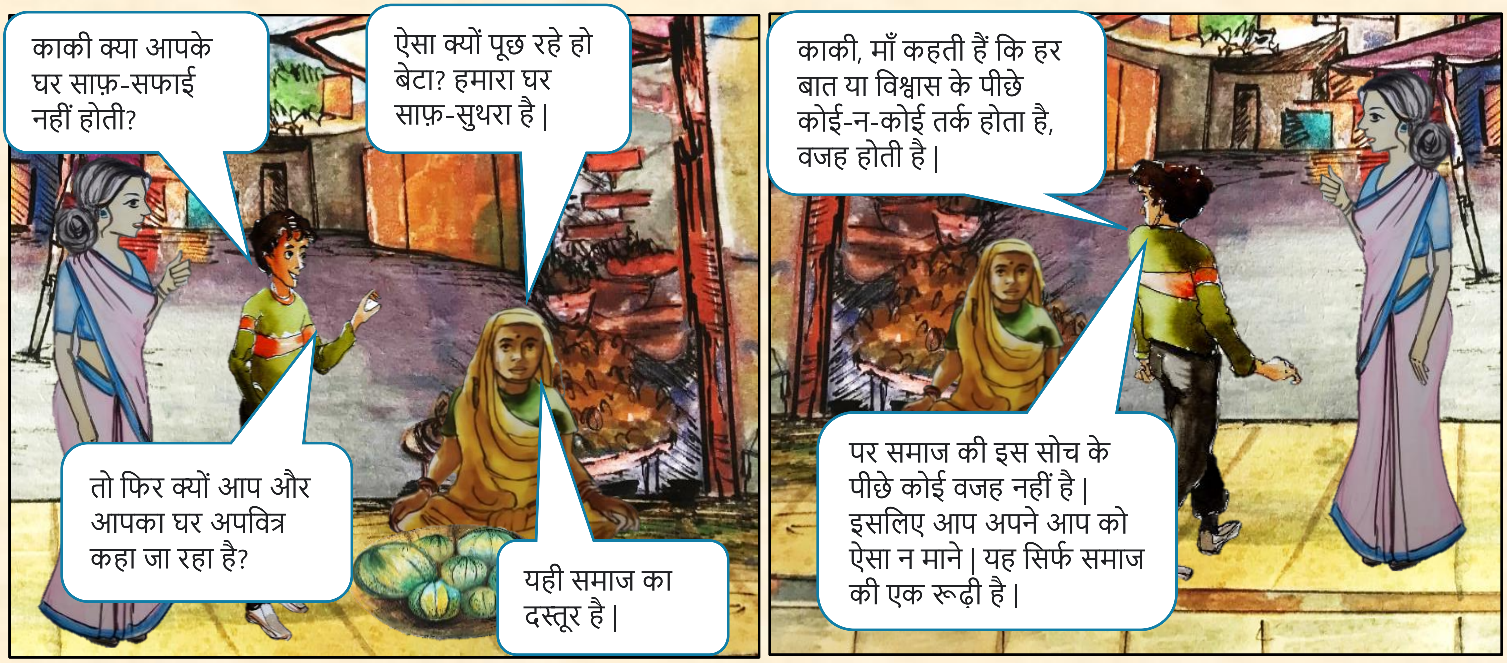

भाषा-विस्तार

खेल–खेल में (टैबू)

उदाहरणस्वरूप नीचे एक कार्ड दिया गया है | कार्ड में हरा रंगीन शब्द है ,उस शब्द का वर्णन इस प्रकार करना है कि सामने वाला वह शब्द पहचानकर बोल दे | साथ में नीचे 4 शब्द दिए गए हैं ,उन शब्दों का प्रयोग वर्णन करते हुए नहीं किया जा सकता| जो उन शब्दों का प्रयोग करेगा, वह खेल से बाहर हो जाएगा | सही शब्द की पहचान करने वाला विजेता होगा | कार्ड को ध्यान में रखते हुए छात्रों ने ऐसे ही और कार्डों का निर्माण पाठ में आए शब्दों के आधार पर ही करना है तथा इस खेल को खेलना है |

नियम-

क- इस खेल को दो दलों में खेला जा सकता है |

ख- पहला दल अपना स्वनिर्मित कार्ड दूसरे दल के एक विद्यार्थी को दिखाएगा |

ग- दूसरे दल का वह विद्यार्थी मुख्य शब्द को अन्य वाक्यों की सहायता से अपने दल को बताने का प्रयत्न करेगा |

ग- बताते समय उसे इस बात का ध्यान रखना है कि कार्ड में नीचे दिए गए अन्य शब्दों का प्रयोग वर्जित है (पहला दल इस बिंदु पर नजर रखेगा)|

घ- विद्यार्थी ने वाक्य इस प्रकार बनाना है कि नीचे दिए शब्द भी प्रयुक्त न हों और उसका दल सही शब्द भी पहचान ले |

अनुभूति

1-एहसास
2-गरीबी
3-दुःख
4-महसूस
(उपरोक्त शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकते)

उदाहरण – इसमें मुख्य शब्द है-अनुभूति - इस शब्द का वर्णन विद्यार्थी ने विभिन्न वाक्यों द्वारा करना है किन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखना है कि कार्ड में नीचे दिए गए वर्जित शब्दों का वह प्रयोग न करे |

जैसे-

1-किसी को परेशानी में देख कर मन में जो भाव उमड़ते हैं (संभावित वाक्य) |

2-जिससे आप दूसरों की भावनाओं को समझते हैं (संभावित वाक्य) |

3-उस मजबूर महिला की भावना को मैं समझ सकता हूँ (संभावित वाक्य) |

जैसे वाक्यों को सुनकर छात्र सही शब्द का अनुमान लगाने का प्रयत्न करेंगे |

इस प्रकार भिन्न-भिन्न शब्दों को इस खेल के माध्यम से पहचानकर विद्यार्थी अपनी शब्दावली बढ़ा सकते हैं |

रचनात्मक कार्य

1- संभ्रांत महिला यदि गरीब अधेड़ महिला से मिलती तो दोनों के मध्य क्या बातचीत होती? संवाद शैली में लिखिए |

2- आपके मित्र, रिश्तेदार, घर या आस-पास काम करने वाले किसी घरेलू सहायक/सहायिका का साक्षात्कार लीजिए और यह पता कीजिए कि समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का कभी वो शिकार बने हैं? कभी उन अंधविश्वासों से उन्होंने बाहर निकलने का प्रयत्न किया है? साक्षात्कार के आधार पर अंधविश्वासों की सूची बनाइए |

परन्तु आपके बेटे को हुआ क्या था? उसकी मृत्यु कैसे हो गई?
महिला हिचकिचाते हुए माँ को पूरी घटना बताती है|
हमारा खरबूजे की खेती का काम है |
हम्मम!
दो दिन पहले ही मेरा बेटा भोर के समय खरबूजे की बेल से खरबूजे तोड़ने गया था!
फिर क्या हुआ?
गीली मिट्टी की मेड़ में आराम करते हुए साँप पर उसका पैर पड़ गया |
ओह!
उस दुष्ट साँप ने मेरे बेटे भगवाना को डंस लिया |
ओह! फिर?
फिर क्या! मुझे जैसे ही पता चला मैं दौड़े-दौड़े ओझा को बुला लाई |
ओझा!
हाँ! बड़े माने हुए ओझा हैं |
पर ओझा को क्यों बुलाया?
नागदेव की पूजा के लिए, झाड़-फूँक करने के लिए |
फिर क्या हुआ?
महिला ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है|
हाय रे मेरी किस्मत! मेरा इकलौता जवान बेटा बच न सका |
सब्र से काम लीजिए |

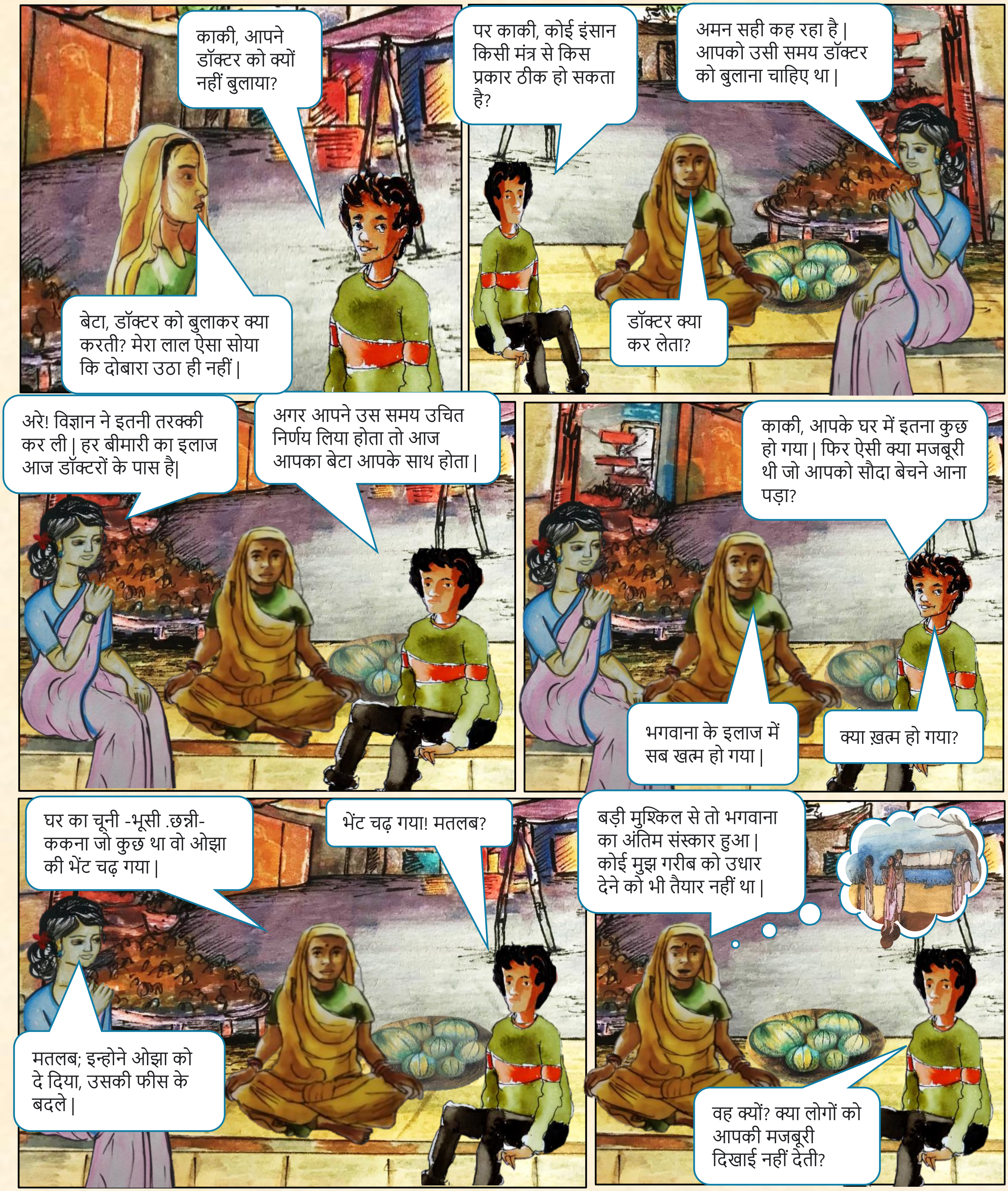

काकी, आपने डॉक्टर को क्यों नहीं बुलाया?
बेटा, डॉक्टर को बुलाकर क्या करती? मेरा लाल ऐसा सोया कि दोबारा उठा ही नहीं |
पर काकी, कोई इंसान किसी मंत्र से किस प्रकार ठीक हो सकता है?
अमन सही कह रहा है | आपको उसी समय डॉक्टर को बुलाना चाहिए था |
डॉक्टर क्या कर लेता?
अरे! विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली | हर बीमारी का इलाज आज डॉक्टरों के पास है|
अगर आपने उस समय उचित निर्णय लिया होता तो आज आपका बेटा आपके साथ होता |
काकी, आपके घर में इतना कुछ हो गया | फिर ऐसी क्या मजबूरी थी जो आपको सौदा बेचने आना पड़ा?
भगवाना के इलाज में सब खत्म हो गया |
क्या ख़त्म हो गया?
घर का चूनी -भूसी .छन्नी-ककना जो कुछ था वो ओझा की भेंट चढ़ गया |
भेंट चढ़ गया! मतलब?
मतलब; इन्होने ओझा को दे दिया, उसकी फीस के बदले |
बड़ी मुश्किल से तो भगवाना का अंतिम संस्कार हुआ | कोई मुझ गरीब को उधार देने को भी तैयार नहीं था |
वह क्यों? क्या लोगों को आपकी मजबूरी दिखाई नहीं देती?

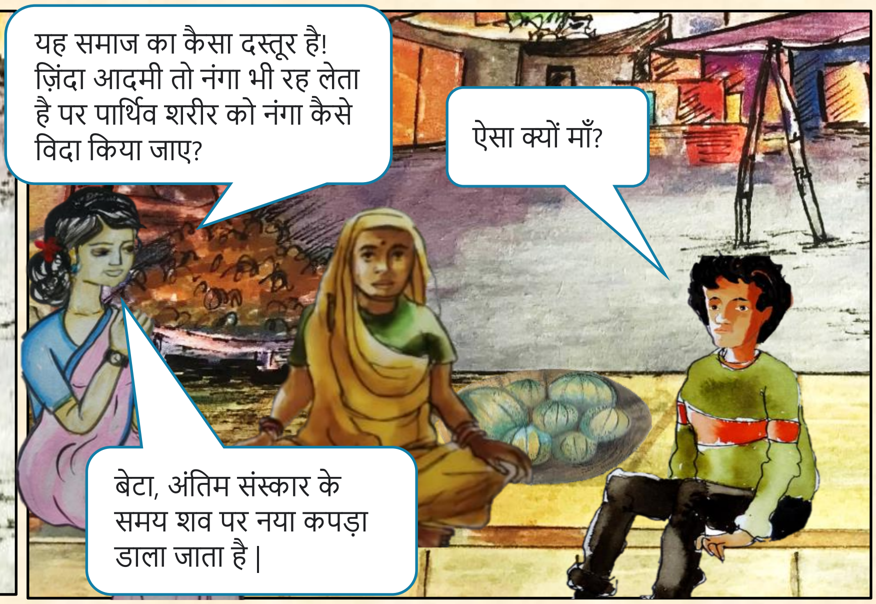

खोजिए और जानिए

विषय एकीकरण गतिविधियाँ

(हिन्दी-गणित)

1. कहानी 'दुःख का अधिकार' की मुख्य पात्र अधेड़ आयु की महिला की भाँति कितने ही लोग ऐसे होंगे, जिनके पास जीवन-मरण से संबंधित मानवीय अधिकारों को भी पूरा करने की सहूलियत नहीं है | इस प्रकार अनगिनत लोग गरीबी की रेखा के नीचे रहते हैं जो अपने लिए दैनिक सुविधाएँ भी नहीं जुटा पाते | सरकारी आँकड़ों के अनुसार आप ऐसे पाँच राज्यों को चुनिए जहाँ गरीबी की रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है | इस प्रतिशत को बार ग्राफ द्वारा दर्शाइए |

(हिन्दी-सामाजिक विज्ञान)

1. पाँच राज्यों का बार ग्राफ बनाने के पश्चात उन राज्यों को भारत के राजनीतिक मानचित्र में दर्शाइए |

बेटे के दुःख से मैं उबर भी न पाई | अब घर में मेरी बुखार से तपती बहू और भूख से बिलबिलाते पोता-पोती हैं | उनका पेट भी तो भरना है |
पर आपके पास खरबूजे भी तो हैं | अपनी बहू को वही खिला देतीं |
बेटा, बीमार व्यक्ति को खरबूजे, तरबूज, आम जैसे फल नहीं खिलाए जा सकते | इससे समस्या बढ़ सकती है |
माँ बेटे को अलग से ले जाती है |
बहुत दुःख झेल रही है बेचारी! हमें इसकी मदद करनी चाहिए |
माँ और बेटा वापस बुढ़िया के पास जाते हैं |
यह सारे खरबूजे कितने के हुए काकी?
सारे!
माँ महिला के उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर उसे दो हज़ार का नोट पकड़ाती है और खरबूजे ले लेती है|
आप लोगों का यह एहसान मैं कैसे चुका पाऊँगी?
एहसान कैसा! हमने आपसे खरबूजे खरीदे और उनका मूल्य आपको दे दिया | अब आप चलिए, मैं आपको आपके घर तक छोड़ देती हूँ |.
आस-पास खड़े दुकानदार आपस में कानाफूसी करने लगते हैं|
इन लोगों को क्या हो गया है? इतना पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी न केवल बुढ़िया के पास नीचे बैठ गए बल्कि उसके खरबूजे भी खरीद लिए |
और तो और बुढ़िया को अपने साथ गाड़ी में भी ले कर जा रहे हैं |
क्या जमाना आ गया है!

बेटे की नज़र ताने मार रहे लोगों पर पड़ती है|
माँ, मैं अभी आया
कहकर ताने मारते लोगों की ओर बढ़ जाता है|
आप लोगों को एक लाचार, बुजुर्ग और दुखी महिला को ताने मारते शर्म नहीं आती?
अरे बिटवा! इतना गुस्से में क्यों हो?
आप सभी मुझसे बड़े हैं | मैं आपके सामने बहुत छोटा हूँ | मेरे लिए यह सब कहना छोटा मुँह बड़ी बात हो पर फिर भी मैं कहना चाहूँगा | आप सभी इस बेचारी काकी के जले पर नमक क्यों छिड़क रहे हो?
तुम अभी बहुत छोटे हो, धर्म-ईमान की बातें तुम्हारी समझ से बाहर हैं |
बुढ़िया को बाज़ार में अपने खरबूजे लेकर आना ही नहीं चाहिए था | घर पर किसी की मृत्यु होने पर सूतक रखना हमारी सदियों से निभाई जाने वाली परंपरा है | इसे इस बात का ख्याल रखना चाहिए था |
यह एक रूढ़िवादी सोच है | इसके सिवा और कुछ नहीं | यदि घर में नियमित रूप से साफ़-सफाई का पालन होता है तो कोई अपवित्र कैसे हो सकता है? आप धर्म की बात करते हैं | इनसानियत से बडा कोई धर्म नहीं हैं |
अपने बेटे को बचाने के लिए इसने सब कुछ खो दिया | आज इसके पास कुछ भी नहीं है | बीमार बहू और भूखे पोता-पोती का पेट पालने के लिए इसे मजबूरी में खरबूजे बेचने आना पड़ा |

विचारावेश

अधेड़ महिला की मजबूरी का विश्लेषण करते हुए बताइए कि उसकी परेशानी के पीछे मूल कारण क्या हो सकता है तथा सुझाव दीजिए कि सरकार इस प्रकार के ज़रूरतमंद लोगों की क्या मदद कर सकती है?

अनुभवीय ज्ञानः भविष्य की ओर

1- आप एक सर्वेक्षण कीजिए जिसमें आप अपने कम-से-कम दस परिचितों/मित्रों/रिश्तेदारों के साथ टेलीफोन के माध्यम से संपर्क कर तालिका में दी गई जानकारी एकत्रित कीजिए तथा इसके आधार पर सामाजिक चित्रण /मान्यता से संबंधित निष्कर्ष निकालिए -

सूतक के कारण बाज़ार में खड़े लोग बुढ़िया को कोस रहे थे | कोई उससे खरबूजे नहीं ले रहा था | यदि आपके सामने ऐसी स्थिति आती है तो क्या आप उस बुढ़िया से खरबूजे खरीदना चाहेंगे?

नाम	**रिश्ता** पड़ोसी/मित्र/रिश्तेदार	**प्रतिक्रया** हाँ/नहीं/पता नहीं
1-		
2-		
3-		
4-		
5-		
6-		
7-		
8-		
9-		
10-		

2- राह से गुज़रते हुए यदि आपके सामने कोई कुत्ता किसी को काट ले/कोई दुर्घटनाग्रस्त हो जाए, आप उसकी सहायता किस प्रकार करेंगे?

ओह! हमें इसके घर के विषय में नहीं पता था |
आप लोगों को कुछ नहीं पता था फिर भी आप लोग ताने मारने से बाज नहीं आए!
हमें अपनी गलती का अहसास हो गया है | आइन्दा हम बिना सोचे-समझे किसी के विषय में कुछ नहीं कहेंगे |
और अंधविश्वासों को मानने की जगह संवेदनशीलता से काम लेंगें।
तुम सही हो बेटा! हम अपने किए पर शर्मिन्दा हैं।
वहीं पास खड़ा लेखक बड़ी देर से यह सब न केवल सुन रहा था बल्कि अपनी आँखों से देख भी रहा था |
बेटा, आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं | जिस महिला का दुःख मैं अपनी पोशाक के कारण जान नहीं पा रहा था, नीचे झुक नहीं पा रहा था, उससे बात नहीं कर पा रहा था, आज तुमने मुझे अहसास करवाया कि मैं कितना गलत था |
अंकल, आप कौन हैं? आप तब से हमारी बातें सुन रहे थे?
मैं भी इन लोगों की तरह ही एक साधारण व्यक्ति हूँ | आज यह सब देखकर मुझे कुछ याद आ गया |
क्या?
मेरी जान-पहचान में एक संभ्रांत महिला के जवान बेटे की मृत्यु हो गई थी |
ओह! वह भी इन्हीं काकी की तरह दुखी थीं?
दुखी तो वह थीं | पूरे ढाई महीने उन्होंने अपने पुत्र का शोक मनाया |
ढाई महीने!
हाँ! इतना समय वह बिस्तर से उठी नहीं | हरदम एक डॉक्टर उसके सिरहाने बैठा रहता था | थोड़ी- थोड़ी देर में उसे मूर्छा आ जाती थी | समाज में सभी उसका दुःख महसस कर पा रहे थे |
दुखी तो यह बेचारी काकी भी उतनी ही हैं किन्तु इनका दुःख समझने के स्थान पर लोग इन्हें ताने मार रहे थे |
हाँ, तुम सही कहते हो | दुःख पर अधिकार सबका समान होता है किन्तु दुःख मनाने की सहूलियत भी चाहिए होती है |

जिस तरह वायु की लहरें कटी हुई पतंग को आकाश में ही रोके रखती हैं , अचानक ही धरती पर गिर जाने नहीं देतीं ,उसी प्रकार विशेष परिस्थितियों में पोशाक हमें नीचे झुकने से रोकती है |दूसरों का दुःख जानने में अड़चन बनती है |
पोशाक का इतना महत्व है!
हाँ, जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है | पोशाक समाज को विभिन्न श्रेणियों में बाँटती है | वह हमारे लिए कई बंद दरवाज़े खोलती है और कई बार अड़चन भी बन जाती है !
अंकल, आप सही कह रहे हैं | आज ही माँ ने मुझे समझाया था कि पोशाक को देखकर किसी के प्रति अपनी धारणा नहीं बना लेनी चाहिए |
बिलकुल सही कहा तुम्हारी माँ ने | मैं कब से इस महिला के रोने का कारण जानना चाह रहा था किन्तु मेरी पोशाक ही व्यवधान बन रही थी |
लेखक तथा अमन को आपस में बात करता देखकर माँ तथा वह महिला भी उनकी ओर आ जाती हैं |
आज इस छोटे से बालक के कारण मेरी भी आँखें खुल गईं |
वह कैसे?
यही कि किस प्रकार हम समाज की रूढ़ियों में घिरे रहते हैं | अंधविश्वासों में फँसे रहते हैं |यदि मैंने अपने बेटे को साँप के काटने पर ओझा के स्थान पर उसे अस्पताल पहुँचाया होता तो शायद मेरा बेटा मेरे पास होता |
और यह भी कि आप या आपके घर की कोई भी वस्तु अपवित्र नहीं है | आप अपनी मेहनत से अपने घर वालों का पेट पालना चाहती हैं जो आपके लिए गर्व की बात है |

जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं | उसी हालत में नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता लेखक चला जा रहा था | सोच रहा था -शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और··· दुखी होने का भी एक अधिकार होता है |

पठन कौशल

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परन्तु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ |

भगवाना परलोक चला गया | घर में जो चुनी-भूसी थी, सो उसे विदा करने में चली गयी | बाप नहीं रहा, तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे | दादी ने उन्हें खरबूजे खाने के लिए दे दिए | लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था | अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता | बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली-और चारा भी क्या था?

प्रश्न- बुढ़िया के हाथ के छन्नी-ककना क्यों बिक गए?

प्रश्न- बुढ़िया को उधार न मिलने के पीछे क्या कारण था?

प्रश्न- बहू को खरबूजा क्यों नहीं खिलाया जा सकता था?

प्रश्न- गद्यांश में समाज पर क्या व्यंग्य किया गया है?

कथन के साथ उचित मिलान कीजिए

क-संभ्रांत महिला ढाई मास तक पलंग से उठ न सकी –

ख- जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता-

ग- पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा –

घ-शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए -

क-और दुखी होने का भी एक अधिकार होता है |

ख- उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र वियोग से मूर्छा आ जाती थी |

ग-तो बेचैनी से कदम तेज़ हो जाते हैं |

घ-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था |

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **बुढ़िया खरबूजे किसमें रखकर बेचती थी?**
   1. टोकरी में
   2. पोटली में
   3. ठेले में
   4. तराजू में

2. **जीवन में पोशाक का महत्व है, क्योंकि-**
   1. वह हमारे सामाजिक स्तर को दर्शाती है |
   2. ख़ास परिस्थितियों में हमें नीचे झुकने से रोकती है |
   3. इसके कारण मनुष्य-मनुष्य में ही भेद-भाव करता है |
   4. उपरोक्त सभी कथन सत्य हैं |

3. **पोशाक की तुलना किससे की गयी है?**
   1. बंद दरवाज़े से
   2. कटी पतंग से
   3. वायु से
   4. मौके से

4. **निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'बिक्री' का विलोम शब्द है?**
   1. नकद
   2. उधार
   3. खरीद
   4. बेचना

5. **कहानी के लेखक का नाम है-**
   1. काका कालेलकर
   2. गणेश शंकर विद्यार्थी
   3. धीरंजन मालवे
   4. यशपाल

6. भगवाना का बदन काला क्यों पड़ गया था?

1. बेहोशी के कारण
2. साँप के ज़हर के कारण
3. ओझा के मंत्रों के कारण
4. मृत्यु के कारण

7. बुढ़िया ---------------रो रही थी –

5. फफक-फफककर
6. बिलख-बिलखकर
7. दहाड़ें मार-मारकर
8. बिलबिलाकर

8. बुढ़िया क्यों रो रही थी?

1. अपनी मजबूरी के कारण
2. बहू की बीमारी के कारण
3. पोते-पोती की भूख के कारण
4. जवान बेटे के शोक में

9- बाज़ार में खड़े लोग बुढ़िया के बारे में घृणा से बात क्यों कर रहे थे?

1. क्योंकि उसका बेटा मर गया था |
2. क्योंकि उसके घर सूतक लगा था |
3. क्योंकि डलिया में रखे खरबूजे सड़ चुके थे |
4. क्योंकि उसकी पोशाक पुरानी थी |

10- बाज़ार में सौदे के पास कौन बैठता था?

1. बहू
2. भगवाना
3. बुढ़िया
4. उपरोक्त दोनों

उत्तर

1. टोकरी में	6. सांप के ज़हर के कारण
2. उपरोक्त सभी कथन सत्य हैं		7. फफक-फफककर
3. वायु से	8. अपनी मजबूरी के कारण
4. खरीद	9. क्योंकि उसके घर सूतक लगा था	
5. यशपाल	10. उपरोक्त दोनों

शब्दावली

1	पोशाक	पहनावा
2	दर्जा	श्रेणी
3	अनुभूति	एहसास
4	वायु	हवा
5	डलिया	टोकरी
6	व्यवधान	अड़चन
7	खसम-लुगाई	पति-पत्नी
8	अधेड़	आधी उम्र
9	समीप	पास
10	नीयत	इरादा
11	निर्वाह	गुज़र-बसर
12	कछियारी	क्यारियों में फल-सब्जी बोना
13	बिक्री	बेचने की क्रिया
14	मेड़	दो खेतों के बीच की सीमा
15	तरावट	नमी, ठंडक
16	ओझा	झाड- फूँक करने वाला व्यक्ति
17	छन्नी-ककना	चूड़ी-कंगन, गहने आदि
18	सहूलियत	आराम, सुविधा
19	बरकत	लाभ, वृद्धि
20	सूतक	जन्म अथवा मृत्यु के समय होने वाला पारिवारिक अशौच
21	संभ्रांत	प्रतिष्ठित, सम्मानित
22	द्रवित	दया से भरा हुआ, पिघला हुआ
23	सूझ	अक्लमंदी, सद्विवेक
24	मूर्छा	बेहोशी
25	वियोग	अलगाव, शोक दशा

अस्वीकरण

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत चित्रकथा लेखक यशपाल जी द्वारा रचित कहानी ‘दुःख का अधिकार पाठ्यपुस्तक स्पर्श, कक्षा नवीं को आधार बनाकर तैयार की गई है | यह पूर्णतः काल्पनिक है, पूरक मात्र है | इसका उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित कहानी की जानकारी को बदलना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों में हिन्दी पठन-पाठन के प्रति रूचि का विकास करना तथा पाठ के प्रति बेहतर समझ प्रदान करना है | इस चित्रकथा के माध्यम से विद्यार्थी सरलतापूर्वक समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पोशाक के आधार पर भेदभाव, संवेदनशीलता तथा दुःख पर सबके समान अधिकार से परिचित होंगे | इसके प्रारूप के निर्माण में कथा की रोचकता बनाए रखने के लिए कुछ काल्पनिक पात्रों तथा संवादों का प्रयोग किया गया है ,साथ-ही साथ मुख्य कथावस्तु, उसके भाव तथा उससे मिलने वाले सन्देश को यथावत् प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है |

अभिस्वीकृति

यह आरेखीय उपन्यास सामूहिक संघ के निरंतर प्रयासों का परिणाम है | हम प्राचार्या, श्रीमती शेफ़ाली गुप्ता के प्रति विशेष आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें आरेखीय उपन्यास को पूर्ण करने में सहायता तथा प्रोत्साहन प्रदान किया | हम बहुत आभारी हैं श्री संदीप सेठी)शिक्षा- निदेशक, M.S.M.S.II संग्रहालय ट्रस्ट (के, जिनके निर्देशन , प्रशिक्षण , सफल मार्गदर्शन तथा अथक प्रयासों के कारण इस आरेखीय उपन्यास की परिणति हुई |

मंत्रणा –निकाय	श्रीमती शेफ़ाली गुप्ता (प्राचार्या,टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार) श्रीमती मल्लिका प्रेमन (प्राचार्या,टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, ईस्ट ऑफ कैलाश) श्रीमती एन सरोज (शैक्षणिक अधिष्ठात्री , टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार) श्रीमती शिवानी गुप्ता (वरिष्ठाध्यक्ष , टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार)
संकल्पना, पटकथा एवं संवाद	श्रीमती सोनिया भाटिया (टी.जी.टी. हिन्दी, टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार)
कला-विभाग	सुश्री मीना नागपाल, श्री कौस्तव नाग, लालनुनकिमी हनाम्ते (कक्षा IX), श्रेया साही (कक्षा X), सुतुन भारद्वाज (कक्षा X), आदित्यन सुब्रामनियन (कक्षा XI)
सूचना प्रौद्योगिकी	श्रीमती मीनाक्षी टिक्कू
छात्रसहयोग	सकीना नदीम (कक्षा X), टिया बैनर्जी (कक्षा X), सुहानी सिन्हा (कक्षा XI)
प्रशिक्षण मंत्रणा	श्री संदीप सेठी (शिक्षा- निदेशक (M.S.M.S.II संग्रहालय ट्रस्ट)

कहानी: एक नजर में

'दुःख का अधिकार' कहानी में लेखक यशपाल ने भगवाना की माँ की दर्द भरी कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, अमीरी-गरीबी तथा ऊँच-नीच के भेदभाव का पर्दाफ़ाश किया है | एक अधेड़ आयु की निर्धन महिला ने अपने तेईस वर्षीय युवा बेटे को साँप के काटने के कारण खो दिया | ओझा को बुलाने, झाड़-फूँक करवाने का भी कोई फायदा नहीं हुआ | घर में बीमार बहू और उसके भूख से बिलबिलाते बच्चों की देखभाल के लिए वह महिला बाज़ार में खरबूजे बेचने आई | आस-पास के दुकानदार सहानुभूति जताने की बजाए उसे ताने दे रहे थे, बुरा-भला कह रहे थे | कोई भी उससे खरबूजे खरीदने के लिए तैयार न था क्योंकि 'सूतक' नामक अंधविश्वास के कारण उन्हें भी 'सूतक दोष' लगने का भय था | लेखक के हृदय में बुढ़िया के प्रति सहानुभूति तो थी किन्तु उसकी पोशाक ने उसे उस अधेड़ महिला के साथ फुटपाथ पर बैठकर उसका दुःख पूछने से रोक दिया | उस पुत्र वियोगिनी को देखकर उसे उस संभ्रांत महिला की याद आई ,जो अपने जवान पुत्र की मृत्यु के पश्चात ढाई महीने तक बिस्तर से उठ नहीं पाई | संभ्रांत होने के कारण लोग उसके दुःख से द्रवित होकर सहानुभूति जता रहे थे | लेखक को अनुभव हुआ कि दुखी होने और दुःख मनाने का अधिकार और सहूलियत भी समाज ने संभ्रांत वर्ग को ही दी है | कहानी में 'अमन' नाम का काल्पनिक पात्र अधेड़ महिला से न केवल सहानुभूति जताता है बल्कि आस-पास के लोगों को रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों से बाहर आने तथा मजबूर लोगों की सहायता करने का सन्देश भी देता है |

द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित :

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल
सी ब्लॉक, पश्चिमी मार्ग,
वसंत विहार, नई दिल्ली -110057
ई- मेल: info.vv@tagoreint.com
वैबसाइट : www.tagoreint.com

रचना-स्वत्व – सर्वाधिकार सुरक्षित
विद्यालय की पूर्व अनुमति के बिना इस उपन्यास के किसी भी भाग की प्रतिलिपि अथवा पुनरुत्पादन किसी भी प्रणाली में, किसी भी रूप में, किसी भी माध्यम से (इलैक्ट्रौनिक, यांत्रिक) संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता |